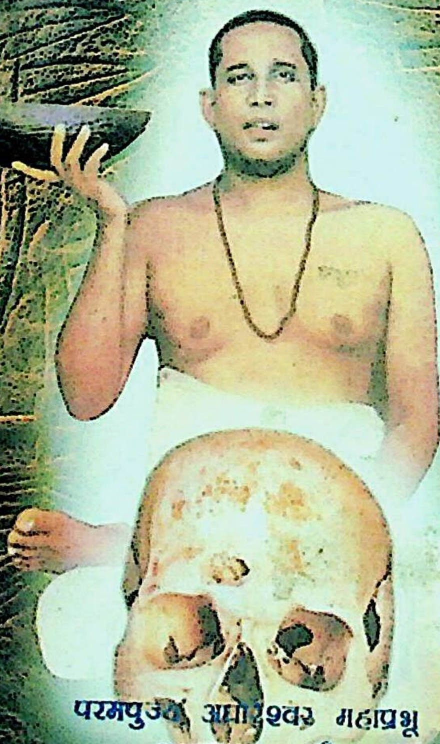
अघोर साधना



परमपूज्य अघोरेश्वर महाप्रभु
भगवान रामजी के द्वारा
मनुष्यों के लिए अघोर साधना विधि
का उनके श्रीमुख से वर्णन

अघोर साधना



अघोर साधना

: प्रकाशक :
अघोर आत्म अनुसंधान केंद्र

: मुद्रक :
माँ मैत्रायनि योगिनि प्रेस, भीमवाडी, साटेली, सिंधुदुर्ग

: प्रथम संस्करण :
१००० प्रति

: मूल्य :
श्रद्धा और विश्वास

नवरात्रि अश्वनी शुक्ल पक्ष
संबत २०५७ (विक्रमी)
२८ सितम्बर २०००

शुभेच्छा

परमपूज्य अघोरेश्वर महाप्रभु के विश्व बंधुत्व कार्य एवं विचारों को सम्पूर्ण भारत एवं विश्व के लोग आत्मसात् कर सकें ।

यह एक विलक्षण तपस्या है । उन महान संतों की जो १९९० से लेकर लगातार भारत वर्ष में सायकल यात्राएँ एवं पदयात्राएँ आयोजित करके अघोरेश्वर के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के प्रयास में लगे हैं । अघोरेश्वर महाप्रभु के प्रिय शिष्य अवधूत संत अलखरामजी और उनके अनुयायी इस कार्य में अपने को नियोजित किए हुए हैं । इनके प्रति श्रद्धा और विश्वास को रखते हुए स्वयं को इनके मार्ग पर चलने का संकल्प करते हुए डॉ. जे. एस. यादव इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देकर अघोरेश्वर के अनुकंपा के पात्र बन गये हैं । हम इनके सुखद जीवन की कामना करते हैं ।

अशोक अक्षोभ्य

(सहसंपादक - अघोर टाइम्स)

ग्रान्थिक ज्ञान

साधनामय भक्तों यह अघोर साधना विधि की जो पुस्तिका आकार रूप में आपके हाँथ में हैं इस पुस्तक में जो भी शब्द आकार हैं यह, अघोरेश्वर महाप्रभु का स्वयं का साधनामय शरीर हैं । यदि आप उनके वताये अनुसार एक कदम भी चलेंगे तो आपको स्वयं ही उस अनन्त अज्ञात ब्रह्म, शिव, अघोरेश्वर के स्वरूप का आभास आपके अन्तः स्थल में अवश्य होगा इस ग्रंथ में जहाँ-जहाँ मांस-मछली या, अन्य ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिसका कुछ लोग विरोध करते हैं, तो यह ज्ञान सीमाबद्ध नहीं है । यह असीम है । समस्त वसुंधरा के लिए है एवं अघोर संतों के साबरी शब्द है । इसका अन्यथा अर्थ न लगायें ।

आशा है आप सद्मार्ग पर चल कर अपने ऊपर उपकार करेंगे और दूसरों पर भी उपकार करेंगे।

अवधूत संत अलखरामजी

अनुक्रमणिका



प्रातः स्मरणीय परमपूज्य अघोरेश्वर
महाप्रभु भगवान रामजी

बंदना

शिव प्रसाद्य प्रतिभाप्रकाशम्
शिवां प्रसाद्याय समस्तसिद्धीः ।

प्राप्याप्यनुत्सेकि मनोहि यस्य
सोऽय स्वभावावधूतरामः ।।१।।

वन्दामहे जगदिदं जगतश्च दुःखम्
यत्प्रोरिता ह्यवतरन्ति महात्मदेवाः।

रामावधूतसदृशाः करुणार्द्रचित्ताः
लोकोपकारकरणै ककुलब्रता ये ।।२।।

आरती

निराकार साकार निरामय, प्रभु अंतर्यामी ।
ॐ जय औघड़ दानी ।
दया-सिन्धु, करुणा के सागर,
गुणागार देवा, ऋद्धि-सिद्धियाँ प्रमुदित करती
पद-रज की सेवा ।। ॐ
सबलों के शुभ-मार्ग प्रदर्शक, अबलों के त्राता,
त्रसित विश्व के दुःख के हर्ता, सुख साधन दाता । ॐ
सत्य धर्म के प्राण ज्योति शिव संस्कृति के प्यारे,
भेदभाव, खल-द्वषदंभ सब, तुमसे हैं हारे । ॐ
वेद, पुराण, शास्त्र के ज्ञाता, शंकर अवतारी,
यज्ञ, दान, शुभ कार्य, शौर्य के, ज्ञानी, व्रत धारी । ॐ
सदाचार संयम के प्रेरक, घट-घट के वासी,
पाकर तुमसा महातपी शुचि, धन्य आज काशी । ॐ
तुमसे शांति कांति जीवन की, हरिजन हैं पाते,
सुर, किन्नर, गंधर्व, यक्षगण, गुण गरिमा गाते । ॐ
भव सागर के कुशल खेवइया, योगिराज योगी,
महिमा, अमित तुम्हारी जग में, आनन्द रस भोगी । ॐ
जो नित पाठ करे उनके घर, सुख सम्पति आवे,
दैहिक दैविक भौतिक, भय का, संकट मिट जावे । ॐ

हर हर, महादेव

ॐ तत्सत्

अघोरेश्वर-वाक्

"ओं घोराद् घोर तराद् काल बिषमात् कालादतद्मविताद, दिव्याद्दिव्य तरात्पुराण विभवाद् विश्व प्रपंचात्मकात्

सर्वस्मात् समुदाय मात्रवपुषो भिन्नाय सर्वात्मने, सर्व संपरिवृत्य वर्द्धित जुषेऽघोराय तुभ्यं नमः ।"

देवी–तुम प्रत्यक्ष का रहस्य जानना चाहती हो ?

जो कुछ देख रही हो–शुभे, वह वाक्–मात्र है । संसार में जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह पदार्थ है, कुछ

निश्चित पदों का अर्थ मात्र हैं । मनुष्य पदार्थ के जाल में फँसकर वास्तविक सच्चाई को नहीं जान पाता।

(*"वाक्पक्षीय"*- में मैंने वाग्देवी के तीन उपरले रूपों को ही माना था । मैंने कहा था कि वृत्तियाँ तीन ही हैं - पश्चन्तो, मध्यमा और वैखरी, क्योंकि पदार्थ - जगत इन्हीं से बंधा है । *"वाक्पक्षीय"* - पद और पदार्थ का परिचय कराने वाला ग्रन्थ है । उसके लिए) इतना ही पर्याप्त था ।

पर सत्य यह है कि वास्तविक सच्चाई परावाक् का विषय है - जो स्पन्दहीन है,

अवल है, आकम्पित है। देवी, यह जो परिदृश्यमान, अनुभूयमान, उपकल्पमान जगत् है–यह माया का खेल है। गणित में, ज्योतिषि में, चिकित्सा में, तर्कशास्त्र में, मंत्रशास्त्र में, तंत्र में जो कुछ दिख रहा है - वह माया है, इन्द्रजाल है, मृगमरीचिका है। मेरे ऊपर विश्वास करो देवो, तुम जो सिद्ध योगिनी हो, यह केवल भाषा का दावपेंच हैं, सत्य तो इसकी परिधि के बाहर हैं - सबको छापकर, सबको व्याप्त करके और फिर भी सबसे अलग।

जिसे तुम जरा-मृत्यु या रोग समझती

हो, अमंगल और अशुभ समझती हो, सब महादेव का "घोर" रूप है। वह सोमा है। असोम रुप तो "अघोर" है, घोर से भी परे, अति घोर से भी परे।

तुमने जिस अशुभ व्यापार पर विजय प्राप्त की है- वह मिथ्या है, इसलिए तुम्हारी विजय ही मिथ्या है। चाहो-देवी-तो इस मिथ्या को प्रत्यक्ष दिखा सकता हूँ ।।इति ।।

(तिथि-बैशाख कृष्ण चतुर्दशी (अघोर-चतुर्दशी) सम्वत्-२०४०।)

नमो देव्यै :

नवरात्र अनुष्ठान की कलश स्थापना विधि

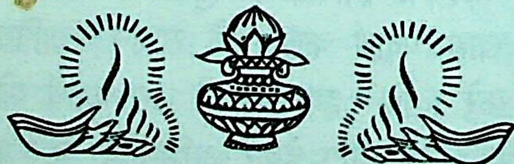
गुरु-वाक्य :-

इस विधि से 'इच्छा-सिद्धि', 'मंत्र सिद्धि' और देवता भी प्रसन्न होते हैं। सोने का हो या चाँदी का हो या ताँबे का हो या मिट्टी का हो कलश हो किन्तु स्वच्छ, सुन्दर हो, फूटे-टूटे न हो, सर्वकार्यों में यह कलश श्रेष्ठ है। षटकोण मण्डल बनाकर बीच में एक गोला शून्य बनावे, उस मण्डल को रज, सिन्दूर या लालचन्दन से लिखकर देवी का ध्यान करें। *'ह्रीं आधार शक्त्यै नमः'* इस मंत्र से मण्डल

की पूजा करें । फिर कलश को आधार मण्डल पर रखें । फिर 'ह्रीं क्रीं श्रीं बोलकर स्थापना करें और कलश पर 'स्वस्तिक' या 'काली बीज' सिन्दूर से लिखें और लाल वस्त्र से ढँककर खूँट बाँध दें । फिर कलश के ऊपर ढक्कन में जौ रखकर ओर उस पर त्रिकोण बनावें और त्रिकोण में 'क्रीं' मंत्र लिखें और नारियल रखें । फिर कलश को फूल और मालाओं से आच्छादित करें। फिर क्रीं मंत्र जपते हुए कलश को हिला दें । फिर 'ह्रीं' मंत्र से कलश पर जल छिड़कें, फिर अपने इष्ट मंत्र से कलश पर चन्दन लगावें, फिर कलश को प्रणाम करें । लालचन्दन ओर

लालफूल चढ़ावें। *'ह्रीं ह्रं स:'* मंत्र बोले। *स: देव्यै नम:* मंत्र बोलें । इस प्रकार दत्तचित्त हो आनन्द भैरव और आनन्द भैरवी की पूजा करें। फिर मंत्र इस प्रकार बोले –*"क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रौं क्र: श्रीं ह्रीं सुधायै: नम:"* । फिर भैरव की समरस चुम्बन लेते हुए अमृतमय देवी का ध्यान करें और बारह बार इष्ट मंत्र जपें । फिर कलश पर तीन बार पुष्पों की पुष्पान्जली चढ़ावें । इसके बाद शुद्ध भक्षण योग्य खाद्य पदार्थ कलश के सामने स्थापित करें । फिर इष्ट मंत्र से उस पदार्थ को जल का छींटा देकर अभिमंत्रित करें । फिर स्तुति करें और देवी से प्रार्थना करें

कि विष्णु और शिव के समान पदों को प्रदान करें। फिर मछली और मांस से देवी का तर्पण करें । फिर मूलमंत्र से पंचतत्वों का शोधन कर देवी के समक्ष अपने आप में आहुति करें । और इस विधि से पूजन करने वाला साधक मंत्रधर हो जाता है और देवी उस पर अनुग्रह करती हैं और गुरु उसके सदा अनुकूल रहते हैं ।



प्राण-प्रतिष्ठा

गुरु-वाक्य :-

क्रीं आदि कालिकायै नमः 'प्राण-प्रतिष्ठा' का मंत्र कहता हूँ । श्रीं ह्रीं क्रीं स्वाहा आदि काली देवतायै नमः । इसके उपरान्त इष्ट मंत्र का उच्चारण करें । *आदि काली जीव प्रविष्टे सर्वपरिवारे कलश मध्ये नमः।।* उस मंत्र में प्राण-प्रतिष्ठा के मंत्र को तीन बार पढ़कर हृदय से और यंत्र से अँगूठा या कानी अंगुली हृदय में लगाकर या कलश से छुवाकर लगावें। जीभ अपनी बाहर निकालें । देवी की प्राण-प्रतिष्ठा कर हाथ

जोड़कर कहें–"हे आद्य सर्वेश्वरी आपका स्वागत है, यहाँ पर आसन हैं । हे परमेश्वरी आप विराजममान हों । तीन बार *"ह्रं ह्रीं क्रीं श्रीं स्वागत-स्वागत"* कहे फिर स्वच्छ जल से तीन बार देवी को स्नान करायें । फिर यंत्र या कलश को बार-बार स्पर्श करें हर-दिशा को । षोडशोपचार से पूजा करें । बाजा, स्नान, माल्यार्पण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, मंत्र जाप इत्यादि अनेकों प्रकार से पूजा करें, मद्य मांस का तर्पण नमस्कार करें फिर आदि वीज 'क्रीं' उच्चारण करें फिर देवी का ध्यान करते हुए उनके दोनों

चरणों को प्रणाम करें । फिर वहाँ रखे हुए त्रिशूल, खड्ग और सिंह-वाहन की पूजा करें । फिर भक्षण करने योग्य खाद्य पदार्थ हाथ में ग्रहणकर मूल मंत्र उच्चारण कर देवी को अर्पण करें। फिर देवी से प्रार्थना करें- 'हे माता आप बड़ी हीं दयालु हैं आप से अनुरोध है, आप ऐसे अवसर हमारे किसी जीवन में न दें कि आप से कुछ कहना पड़े । आप भक्ति मुक्ति सदैव देते हुए अपने चरणों के पास सदैव लगाये रखें । फिर प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, मंत्र पढ़े । फिर देवी जी को चरणों

में साष्टांग प्रणाम करें। फिर देवी के हर अंगो पर पुष्प अर्पण करें–मूल मंत्र पढ़कर। फिर उसके पश्चात *"ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः नमः"* यह मंत्र पढ़ने के पश्चात अपने गुरुदेव की पूजा करें। क्योंकि गुरुदेव के पूजन के बिना कोई सिद्धि मंत्र में या देवता से मिलना असम्भव है। इसलिए सब करने के पश्चात् गुरुदेव के पूजा के पश्चात् अपने नवरात्रि के अनुष्ठान में तन्मयता के साथ नौ दिन तक लग जायें।

नमो देवी, नमो शक्ति, नमो गुरु।

ॐ तत्सत्

मंत्र-साधना-विधि

अघोरेचार्य बाबा कीनाराम

अघोरेश्वर भगवान राम जी

१. साधना प्रारम्भ करने के पूर्व सुगम आसन लगाकर, मेरूदण्ड को सीधा कर बैठ जाइये ।

२. उसके बाद दो-तीन बार जोर से जमुहाई लीजिये ।

३. तत्पश्चात् श्वांस खींचकर पेट को फुलाइये । इस समय हाथ बगल में सीधा करना चाहिए । (कुम्भज क्रिया)।

४. उपर्युक्त सभी क्रियाओं को करने के पूर्व चित्त को सभी प्रकार के संकल्पों-विकल्पों

से खाली कर शून्य की स्थिति में ला दें।
५. उसके बाद दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों कर्ण-छिद्रों को तर्जनी एवम् मध्यमा अंगुलियों से दोनो आँखो को और अनामिका अँगुलियों से दोनो नाको के छिद्रों को बन्द कर दें तथा कनिष्टिका अँगुलियो को मुख पर रख दें। इस प्रक्रिया को तीन बार करें।

६. तत्पश्चात् आप जिस स्थित में हों अपने श्वांस को रोक दें। दूसरे शब्दों में श्वांस को न भीतर खीचें न बाहर करें। उसके बाद बिना जीभ हिलाये और उच्चारण किए अपने गुरु-मंत्र का मानसा जाप करें। मंत्र-जाप का जो विधान है उसके

अनुसार मस्तक में श्वेत दल पद्म (कमल) पर आसीन गुरु महाराज का ध्यान करते हुए या स्वयम् में अपने इष्ट-देवता की मूर्ति स्थापित कर उनका ध्यान करते हुए मंत्र जाप करें। यह क्रिया शुरू कर धीरे-धीरे इसकी अवधि ३ मिनट तक पहुँचनी चाहिए। क्रम में ध्यान करते समय गुरु-मुर्ति या इष्ट देवता का ध्यान इस प्रकार से होना चाहिए कि साधक यह महसूस करें कि आमने-सामने उनका दर्शन कर रहा हैं।

उपर्युक्त ढंग से मंत्र-जाप करने पर साधक यदि धीरे से अपना हाथ हृदय पर रखेगा तो उसे मंत्र-जाप के स्पन्दन की अनुभूति होगी।

७. इसके पश्चात् अपनी आँखों को खोलकर निर्विकार भाव से शून्य में किसी बिन्दु पर स्थिर कीजिए। स्थिर हो जाने के बाद दृष्टि ऊपर नीचे कर अपनी मुखाकृति देखिए। इस प्रक्रिया में भी मंत्र-जाप धीरे-धीरे धीमी श्वांस पर पूर्व वर्णित ढंग से चलते रहना चाहिए। ऐसा करने पर साधक को नाक से निकल रही श्वांस के धुँए में गुरु-मंत्र का रूप दिखलाई पड़ेगा।

८. मंत्र-जाप में जिह्वा की स्थिति एकदम शान्त भाव से एक जगह पर बनी रहनी चाहिए, किसी प्रकार से हिलाना-डुलाना

नहीं चाहिए । निर्दिष्ट ढंग से मंत्र-जाप करने पर जिह्वा में एक विक्ताण स्वाद की अनुभूति होगी।

६. प्रणव क्रिया : प्रणव "ॐ" का उद्गम - स्थान नाभि है । इसका उच्चारण नाभि से प्रारम्भ कर धीरे-धीरे ऊपर की और ले जाकर ब्रह्म-रन्ध्र में पहुँचा कर समाप्ति करें । आसनस्थ होकर मेरूदण्ड को सीधा कर यह क्रिया होनी चाहिए । तत्पश्चात् "माँ" का प्रणव होना चाहिए और गुंजरित करना चाहिए । इन तीनों ही प्रणव में से प्रत्येक को तीन बार करना चाहिए ।

(साधना के बारे में उपर्युक्त निर्देश देते हुए पूज्यपाद

अघोरेश्वर महाप्रभु अवधूत भगवान राम ने कहा) -

१०. मंत्र जाप करने में इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि साधक का संकल्प जैसा होगा तदनुकूल ही उसे परिणाम प्राप्त होगा । यदि संकल्प अच्छा हैं, ईर्ष्या, द्वेष एवम् घृणा से प्रेरित नहीं है तो इसका परिणाम अनुकूल होगा, और यदि बुरा है तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा । हम सभी अपनी आत्मा रूपी कल्प-वृक्ष के नीचे बैठे हैं और जैसा हमारा संकल्प होगा उसी के अनुरूप हमें प्राप्ति होगी ।

इस प्रसंग में एक दृष्टान्त देते हुए महाप्रभु ने कहा है कि मनुष्य एक बार एक

वृक्ष के नीचे पहुँचा । वह कल्पवृक्ष था किन्तु उस मनुष्य को इसका ज्ञान नहीं था । उसके मन में भोजन की इच्छा हुई । तत्काल ही उसके सन्मुख उसके मनोनूकल भोजन आ गया । पुनः उसके मन में आराम करने के लिए बिस्तर की इच्छा उत्पन्न हुई, बिस्तर भी आ गया । तब उसके मन में यह संशय एवम् भय हुआ कि कहीं इस वृक्ष में भूत-प्रेत तो नहीं निवास करते हैं और वे मुझे मार न बैठें । यह विचार उठते ही उसके साथ वैसा ही घटित हुआ । यह इस बात का द्योतक है कि व्यक्ति का विचार या संकल्प जैसा होगा

उसको वैसा ही फल प्राप्त होगा ।

आगे चल कर महाप्रभु ने कहा-

११. साधना-उपासना द्वारा उपलब्ध सत्य की अनुभूति ही साधुता हैं । वह किताबों धर्मग्रथों से या मन्दिर-मस्जिद में जाने से नहीं प्राप्त होगी । शुद्ध चित्त होकर स्वभाव से ही चैतन्य को जान और समझ सकते हैं। इस आसन, प्राणायाम, ध्यान-धारणा का तात्पर्य यही है कि अपने भीतर जो एक घृणितम्लेच्छ प्रविष्ट हो गया है उसे भगा दिया जाय । उसके बाद ही स्वभाव से सहज ढंग से सत्यता-साधुता की प्राप्ति कर सकते हैं । स्थिर चित्त होने से दूसरे

के मन की बात जान लेना, दूर-दूर देशों में कहाँ क्या हो रहा है, क्या होने वाला है, इसका ज्ञान भी प्राप्त किया जा सकता है। यह सब व्याकुल होकर घबड़ा कर ढूँढ़ने से कहाँ मिलेगा । चित्त को विश्राम दीजिए और इस स्थित में जाइये जहाँ उसमें न संकल्प हो न विकल्प और तभी सब कुछ सरल एवं सुलभ होकर विदित होने लगेगा । स्थिर मस्तिष्क होने से सब कुछ मालूम हो जायेगा । ऐसी दशा में पहुँचने पर, यदि किसी दूर-देश की बात जाननी हो तो वैसा ही प्रयास स्वतः होने लगेगा । तब सजग-सचेत हो जायेगे, और

जगत के कल्याण का मार्गतिक कार्य करने लगेंगे । दूरदर्शी समय और काल की गत को पहचानता है, ईश्वर की शक्ति को पहचान और जान सकता है । मनुष्य दुर्बल होता है। उसके मन में सैकड़ों इच्छाएँ और आकांक्षाएँ उत्पन्न होती है किन्तु शायद ही कोई एक-दो इच्छाएँ पूरी हो पाती हों। अतः आप आकांक्षा न करें। यह समझकर स्थिर चित्त से पूर्व में बताये गये ढंग से साधना करने से सहज ही में अनुकूल दिशा में प्रगति होने लगेगी और खेल-खेल में ही साधक को साधुता-सत्यता की स्थिति प्राप्त होगी । पहले से आकांक्षा

करने से कठिनाइयाँ होगी, समस्याएँ खड़ी होगी और शायद उन्हीं में उलझा रह जायेगा ।

१२. मंत्र के स्मरण-चिन्तन से स्वाद मिलने लगेगा, ठीक उसी प्रकार से जैसे इमली के स्मरण मात्र से जिह्वा में लार आ जाती है । मंत्र के स्मरण चिन्तन से तत्काल ही आभास-ज्ञान होने लगेगा कि वह क्या चीज है । स्पर्श गन्ध का तत्काल प्रभाव पड़ता है । बहुत-सी बातें दिखावा होती हैं जिनमें साधुता नहीं है, सत्यता नहीं है । साधुता दूसरे के लिए नहीं होती । वह साधक कि स्वभाव की वस्तु है । साधुता

प्राप्त करने के बाद साधक सिद्ध हो जाता है और वह जिस किसी पर जिस भाव से दृष्टिपात करता है वैसा ही हो जाता है, या किसी-किसी के विषय में जैसा सोचता है वैसा ही घटित होता है। उदाहरण के लिए डायन की दृष्टि किसी-किसी स्त्री के साथ कुछ ऐसी तांत्रिक क्रियाएँ जाने या अनजाने में हो जाती है जिससे उसकी दृष्टि में दोष उत्पन्न हो जाता है जो उसका स्वभाव बन जाता है। बिना इच्छा किए हुए भी वह यदि किसी पर दृष्टिपात करती है तो उसका अमंगल हो जाता है, सत्य ही ईश्वर है।

उसे स्वभाव से जाना जा सकता है, इसके लिये दूर दृष्टि की आवश्यकता नहीं है। मन-मस्तिष्क रहित हो तब यह स्थित हो, संकल्प-विकल्प रहित हो तब यह स्थित प्राप्त की जा सकती है। अब यह प्राणायाम, प्रणव-मंत्र जाप, ध्यान-धारणा इत्यादि दिखावे की वस्तु नहीं है, इन क्रियाओं को करते समय किसी की प्रतिक्षा न करें। उस समय कोई आता-जाता रहे इसका आपके चित्त पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। सहज स्वाभाविक ढंग से तारतम्य से युक्त होकर साधना करनी होगी। अघोरेश्वरों की महान आत्माएँ

इस कुण्डस्थल में सुक्ष्म रूप में वायु में (ब्रह्माण्ड-खप्पर) में विचर रहीं हैं । साधना द्वारा इन महान आत्माओं की उपस्थिति का आभास हो जायेगा । अनुभूति में ऐसा प्रतीत होता है कि पूजा करते समय अलग-बलग में माँ खड़ी हैं, सामने भैरव, खड़े है और आस पास अन्य विभूतियाँ चलतीं-फिरती नजर आती है । ये पूनीत आत्माएँ इतनी व्यापक हैं कि सारे भुमण्डल में एक ही साथ भिन्न-भिन्न साधकों को दर्शन दे सकती हैं साधक को इसकी अनुभूति होने लगेगी, ध्यान होने लगेगा, स्पन्दन होने लगेगा ।

साधकों को प्रसन्न चित्त होकर पूर्ण आह्लाद के साथ साधना व उपासना करनी चाहिए। तभी कुण्डलिनी जागृत होगी और साधना सफल होगी।

अघोर-पटल

(हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद)

१. त्रिशूल और खग्डांग को धारण किये हुए, मुण्डमाला धारण किए पार्वती पति शंकर हिमालय पर्वत पर बैठे हैं ।

२. गन्धर्व और सिद्धगणों से सेवित त्रिपुरासुर को मारने वाले शंकर, स्कन्द और गणेश से युक्त मुस्कुराते हुए हैं ।

३. गुणातीत, विद्रुप सदसत्पदशोभित शंकर से विनम्र होकर भगवती पार्वती ने प्रश्न किया ।

पार्वती बोली :-

४. समस्तलोक के स्वामी, सब प्राणियों

पर दया करने वाले, समस्तसत्त्व के स्थान, प्रलय और उत्पत्ति को करने वाले आप हैं।

५. आप महादेव, महारुद्र बड़े गुणों से विभूषित, व्यापक, ईश्वर और सर्प के यज्ञोपवीत को धारण किए हुए है।

६. महेंश, मदन (कामदेव) को ध्वस्त करने वाले, स्कन्द को वरदान देनेवाले और देवताओं को भी सर्वदा वर देने वाले हैं।

७. आप त्रैलोक्य के स्वामी हैं, आप सूर्य, चन्द्र, शिव, अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी हैं।

८. आप आकाश और महाकाश

है । आप ही समस्त प्राणियों की गति हैं। आप को छोड़कर दूसरा तारने वाला नहीं है ।

८. हे भगवान ! आप मुझ पर प्रसन्न हों, मुझे वरदान दें और दिव्य अघोर सुनावें ।

१०. यदि आप की मुझपर दया है तो सुनने मात्र से साधक को परमपद देने वाले और सारभूत उस पटल को सुनावें।

श्री भैरव बोले :-

११. हे देवि ? देवताओं को भी दुर्लभ उस पटल को जो अघोर महामंत्र है और निश्चित सिद्धि देनेवाला हे उसे मैं कहता हूँ, आप सुनें ।

१२. अघोर परमदेव, तीनों लोकों का स्वामी, ईश्वर, भैरव, भैरवरूपधारी (उग्र) गुणातीत और जगत का कारण है ।

१३. वह जगत् को उत्पन्न करता है, जगत् का पालन और संहार करता है, तथा वही त्रैलोक्य के उद्धार पटल, पद्धति कवच स्तोत्र, सहस्त्र नाम मंत्रोद्धार एवम् मंत्र आदि को तुमसे प्रसन्न होकर कहता हूँ ।

१५. मंत्रोद्धार लयांग और प्रयोग तथा इस पंचाग को जानकर यत्न पूर्वक गुप्त रखना परम आवश्यक है (अघोरेभ्यो मंत्र) ।

१६. इसके उपासक को विघ्न, कष्ट, विरोध,

भय, मोह दरिद्रता आदि का भय नहीं रहता और उसे दीक्षा की भी आवश्यकता नहीं है । यहाँ सिद्ध और साध्य का विचार न शत्रु पक्ष का भय ही है ।

१७. यह साक्षात् अमृतस्वरुप अणिमयादि अष्ट सिद्धियों को देनेवाले है । सम्प्रदाय में दीक्षित कूलीन और तंत्र मंत्र के मर्मज्ञ को ही यह दिया जाय।

१८. अष्टविधि कीलन, उत्तम संजीवन मंत्र को जानने वाली हे देवि ! अघोर मंत्र आठ कीलों से कीलित है ।

१६. प्रयत्न पूर्वक गोपनीय मंत्र कीलन, आचार, उत्तम संजीवन मंत्र और सम्पुटविधि

प्रकाशित करता हूँ ।

२०.सभी ऐश्वर्य को देने वाला यह महामंत्र किलित है, जिसमें बज्र के पाँच बीज और विश्वराट्अक्षर हैं ।

२१.तीन विश्वबीज और पार्थीव बीज से उत्पन्न इस उत्तम मंत्र की साधना विधि हे देवि ! सुनें ।

२२.हे प्रिये ! मंत्र के आदि में अक्ष से बज्र तक बीजों का प्रयोग करें । उपरोक्त संजीवन मंत्र और उसका उत्कीलन भी सुनें ।

२३.हे सुरेश्वरी ! प्रारम्भ में विश्वबीज से बज्रान्त का प्रयोग करना चाहिए हे ईश्वरि

! उस मंत्र में आदि बीज से बज्रान्त तक मंत्रोद्धार करना ।

२४.यह मंत्रराज संजीवन मंत्र सिद्ध मंत्र जप करने योग्य है । इसकी संपुट विधि सुनें ।

२५.किलादि से बज्रान्त तक इस मंत्र को संपुटित करना । पशु के सानिध्य से हे सुरेश्वरि ! इसे गुप्त रखना चाहिए । जो अघोर अघोरतर अघोर रुद्ररुप हो उसी से भेद रहित कहना चाहिए । इस प्रकार सम्पूर्ण अघोर रुप को नमस्कार है ।

सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः

अघोरेभ्योथघोरेभ्यो नमस्ते रुद्ररुपेभ्यः

इति सिद्धमंत्र :

अघोरेभ्यो ओरघोरतरेभ्य :
सर्वतः सर्वेसर्वेभ्यो
नमस्ते रुद्ररुपेभ्योथ घोरेभ्य :

।। इति सम्पुट मंत्र ।।

इस मंत्र को दीक्षित साधक वर्णलक्ष संख्या पूरी होने तक जप करे । यही पुरश्चरण हैं । जिस प्रकार जीवरहित शरीर किसी कार्य को करने में समर्थ नहीं है उसी प्रकार पुरश्चरण किए विना मंत्र फलदायक नहीं होता ।

अर्द्ध रात्रि के समय में और मध्यान्ह में सूने घरों में, चौराहे पर, वटवृक्ष के

नीचे, श्मशान में अथवा जंगल में पुरश्चरण करना चाहिए। भूकम्प के समय देवता की पूजा करके मंत्र के दस हजार जप करने से साधक को वर्णलक्ष जप करने का फल होता है।

प्रशस्त दिन एवं ग्रहस्थिति रहने पर स्वच्छ घर में देवता की पूजा करके अयुत (दस हजार) मंत्र जप करने से एक कोटि जप करने का फल होता है।

अब समस्त तंत्रों में गुप्त, सम्पूर्ण सिद्धि को देने वाले समस्त अभिलाषा को पूर्ण करने वाले मंत्र का उद्धार करना चाहिए।

इस अघोर मंत्र के महाकाल

भैरवऋषी है, उष्णिक् छन्द श्रीमत्कालाग्निरुद्र अघोर देवता देविवीर्य और कहा है श्रुति वीज और शक्ति श्रवण कीलक है। आठ अणिमादि सिद्धि के लिए इसका विनियोग है।

मंत्रः–अस्य श्रीमदघोरमंत्रास्य श्री कालाग्निरुद्र महाकाल वामदेवऋषयः त्रिष्टुप् पक्तिरनुष्टुप् छन्दांसि श्रीमदघोर भैरवी देवता अणिमाघष्ठ सिध्यर्थम् अघोर जपे विनियोगः।

लयांग–हे देवि, जिसके सुनने मात्र से पुरश्चरण के फल की प्राति होती हो सभी आगमों से प्रतिपादित लयांग को सुनें।

इन्द्र अग्नि धर्मराज त्रिऋति, बरुण,

अनिल, कुबेर, ईश ये आठों द्वारपाल है । चार दिकपालों की दिशाओं में एवम् विदिशापालकों की विदिशाओं में दक्षिणवर्त क्रम से पूजन करना उत्तम है । उर्ध्व में गणपति और अधोभाग में प्रयत्नपूर्वक बटुक का पूजन करना, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर में नन्दी, भृंगी, रिट और तुण्डी का मंत्र साधक को योजना करनी चाहिए । वीरेस को भी जिसके सुनने का सौभाग्य नहीं है और भृंगी, रिटि से भी जो गुप्त है ऐसे अष्टदलार्चन विधि को हे देवेशि ! आप सुनें । पुष्पद, नाविक, अल्पचित्त, लोहित, सुन्दक,

त्रिपुरास्थिविंचारक, उग्ररूप और स्वप्ननिवर्त्तक ये आठ हैं ।

षोडशारपूजनः हे सुन्दरि षोडशार में सोलह गुणों की पूजा करके हे वरनाने, अर्द्ध रात्रि के समय पूजन करने से तुरन्त सिद्धि प्राप्त होती है । ऐसे अष्टदल की पूजा विधि सुनें । महाकाल, कालग्नि, संहार, रुद्रभैरव, उन्मत, समरानन्द, कराल और विकराल इन आठ भैरव को अष्टदल में अर्चना करनी चाहिए ।

अष्टकोणार्चन; हे पर्वतनन्दिनि, साधक को अष्टकोणों में ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि आठ माताओं का पूजन करना चाहिए ।

ब्राह्मी, नारायणी, कौमारी, अपराजिता, महेश्वरी, चामुण्डा, वाराही और नरसिंहो ये आठ माताएँ हैं । वामावर्त से इनका पूजन और दक्षिणावर्त से अन्य पूजन विहित है ।

हे देवि ! प्रसन्न मुख कमल वाले, दयास्य, मुष्टवक्त्र, वहिवक्त्र, व्यालास्य और मकरास्य इन पाँचों की पंचकोण में सव्यावर्त क्रम से दुर्वाङ्कर से पूजन करना चाहिए । हे देवि ! त्रिकोण में विशेषतः नदी का पूजन करना उचित है। गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का भी पूजन करना चाहिए।

वामदेव, महादेव, सद्योजात, सदाशिव,

बलप्रमथन, सर्व, विकरण और बल का भी पूजन करना चाहिए।

विन्दु में मंत्रनायक अघोर देव का पूजन करना चाहिए ।

हे देवि ! इसके अनन्तर तीनो तंत्रों में गुप्त ईशान, रुद्र, तत्पुरुषादिगायत्री, सावित्री और भारती का पूजन करना चाहिए ।

हे देवि ! अब सत्व् रज और तमोमय - रूप देव का ध्यान कहता हूँः-

श्री चन्द्रमंजुलगताम्बुजपीठमध्ये
देव सुधास्त्र विणामिन्दु कलावतंसम्।
मुद्राक्षसूत्रकलशामृत पद्महस्तं
देव भजामि हृदये भुवनैकनाथम्।

।। इतिध्यानम् ।।

मनोहर चन्द्र के समान कमल पीठ प विराजमान मुद्रा, अक्षसूत्र (माला) अमृतकल और कमल पुष्प हाथों में लिए चन्द्रकल धारण किए अमृत बरसाने वाले भुवनों के एक मात्र स्वामी अघोरदेव का हृदय मे ध्यान करते हैं । विकशित कुल वाल व्यक्ति अपनी नाभि में सित भैरव के मण्डल में रज, सत्त्व, तम रुप की भावन करें ।

अठारह भुजा, दिव्य रजोगुणविभूषित कोटि सूर्य के समान प्रभावाले अघोर देव का उस मण्डल के मध्य में अनुसंन्धान

करें।

बाल सूर्य मण्डल के आकार, तीन नेत्रों से सुशोभित, मुद्रा, माला, प्रास, शूल गदा कुन्त (भाला) खंड्ग पास पट्टिस शक्ति तोमर नाराच यम खष्टांड्ग स्वर्णकलश वर अभय और कमल हाथों में धारण किए, दिगम्बर, घुंघराले पीले केशो की जटा धारण किये, आठ मातृकाओं से युक्त, गन्धर्वगणों से सेवित, मंत्रों के नायक महामंत्रात्मक अघोर देव का स्वरूप है।

ऐसे देव का हृदय में ध्यान करना।

प्रयोगः जिसका उचित विधान करने

से जीवनमुक्ति प्राप्त होती है, दश तंत्रों में भी जो गुप्त है ऐसी प्रयोग विधि हे देवेशि ! आप सुनें ।

स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, शक्तिप्रयोग, पुष्टिप्रयोग, सान्तनिक प्रयोग और मुक्ति साधन ये दश प्रयोग कहे हैं ।

अघोर भैरवी की विधिवत पूजा करके इन दशों का साधन हे पार्वती यथा क्रम से सुनें । जितेन्द्रिय साधक नदीतट, बन या चतुष्पथ पर अर्द्ध रात्रि के अनन्तर विधिपूर्वक ध्यान करे -

वट मूल में आसन शुद्धि कर, स्वयंत्रका

पूजनकर आदरपूर्वक हे महेश्वरी, कवच का पाठ करे ।

हे पार्वती मूल का निष्कीलन कर सहस्त्र नाम मंत्र स्तोत्र का अयुत संख्या पाठ करे।

घी, गेहूं का आटा, नीलसूत्र, श्वेत और नीले पुष्प द्वारा हे, शिवे ! दशांश होम विहित है ।

विशेष रूप से रजस्वलारज से भीगे कपड़ा द्वारा दशांश तर्पण और दशांश मार्जन भी करे ।

विधिपूर्वक ब्राह्मण भोजन कराकर भस्म का तिलक धारण करने से सूर्य और चन्द्र

के पथ में शीर्घ स्तम्भन होता है ।

शत्रुसेना, दस्यु, कामिनी का भी स्तम्भन होता है यदि कुदिन और कुग्रह में रात्रि में साधक शक्ति का पूजन करे ।

हे महा देवी ! विधान पूर्वक अमावस्या में शक्तिपूजन कर सुरेश्वर अघोर देव का ध्यान करता हुआ सुरति साधन करे।

नदीतट या उद्यान में कुशासन पर स्थित हो अयुत संख्या में मूलमंत्र का जप कर खीर और घृत से हवन करना।

उस भस्म में वीर्य मिलाकर तिलक लगाने से अखिल लोक के साथ केशव को

भी साधक मोहित कर लेता है । शत्रु को भी मोहित कर लेता है । फिर साधारण जन के लिए तो कहना ही क्या है ।

कृत्तिकानक्षत्र के अन्तिम चरण में सूने जंगल में जाकर परिवार सहित शिव का पूजन कर संकल्पपूर्वक शत्रुका नामोच्चारण करके मूलमंत्र का अयुत संख्या में जप करे।

घी, सरसों और मयूर पंख से हवन करने से तुरन्त ही युद्ध में शत्रुका नाश होता है ।

शुभ दिन मध्यान्ह के समय देवता का पूजन कर, मूलमंत्र का सहस्त्रजप करे ।

पुष्प का अथवा घी का हवन करे । रज, दूर्व और वीर्य का हवन करने से स्वर्ग में रहने वाली देवकन्या का भी आकर्षण होता है ।

शुभ दिन मध्यान्ह के समय उपवन में जाकर सुन्दर वृक्ष के नीचे रुद्र का पूजन कर अयुत जप करे । जातीपुष्प, दही, घी, पुष्प, चीनी और सहद मिला कर दशांश हवन करें । ऐसा करने से इन्द्र भी वशीभूत हो जाता है तो दूसरों का क्या कहना ।

शनि की रात्रि समाप्त हो और रवि का आगमन हो, हे पार्वती अश्वत्थ (पीपल) के नीचे रुद्र का पूजन करे । पृथ्वी पर

यंत्र लिखे एवम् बीजों से उसे वेष्ठित करे, मूलमंत्र से यंत्र का पूजन करे, मूलमंत्र का अयुत संख्या जप करे। घी, जव मत्स्य श्रृगालमांस और सरसों से हवन करे। ऐसा करने से कर्म - मन और वाणी से शत्रु का उच्चाटन निश्चित होता है।

शुभ पर्व में सायंकाल चन्द्रोदय होने पर हे शिव ! फट्कार से दिग्बन्धन करे, आसनशुद्धि करे। मूलमंत्र का अयुत जप करे। घी, मनुष्य का नख, केश और बिलार के अतड़ी से हवन करे। ऐसा करने से दुर्भिक्ष में भी शान्ति मिलती है। अपने जन्म के दिन और जन्म के समय

देवता का पूजन कर मूल मंत्र का अयुत जप करे । खीर पायस आवले के छिलके मत्स्यखण्ड तथा ऊँट की आँतों से हवन करने से तीनो लोकों के देवताओं की पुष्टि होती है ।

साधक अपने विवाह के दिन कही हुई विधि के अनुसार शक्ति का पूजन करे । आनन्ददायक रतोत्सव के समय मूलमंत्र का अयुत जप करे । शक्ति वृक्ष के नीचे आसन जमाकर शक्ति उपासना में लीन होकर रजस्वला के रक्त में डूबा हुआ वस्त्र खण्ड, घी, पायस अंगूर, चींनी, और पुष्प से हवन करे । ऐसा करने से बन्ध्या और

मृतवत्सा भी सुन्दर संतति प्राप्त करती है ।

तिष्य नक्षत्र में मध्यान्ह और अर्धरात्रि के समय शून्यगृह अथवा श्मशान में जाकर देवी का पूजन करे । घी और पायस का हवन करे । मत्स्य आदि का देवी को उपहार दे । ऐसा करने से स्त्री का जकड़ा हुआ गर्भ, योगी, रोगी और योनि आदि मुक्त होते है । हे देवि ! यह उपर्युक्त सत्य जानो । उपर्युक्त ये सब प्रयोग साधक के द्वारा साध्य है । हे प्रिये! अपनी रक्षा के लिए उपर्युक्त सब प्रयोग अत्यन्त गुप्त रखनी चाहिए । इस प्रकार

अत्यन्त गुप्त तंत्र और मंत्र रूपी सागर को पार करने वाला यह पटल मैंने कहा। इसे गुप्त रखना चाहिए और प्रयत्न पूर्वक गुप्त रखना चाहिये।

(इति अघोर पटलः समाप्तः)

समर्पण गान :-

सर्वेश्वरी शरणम् गच्छामी
अवधूतम् शरणम् गच्छामी
माँ गुरुदेव शरणम् गच्छामी ।।

जय माँ सर्वेश्वरी   जय माँ गुरुदेव



प्रातः स्मरणीय परमपूज्य अघोरेश्वर
महाप्रभु भगवान रामजी

अघोर चक्र-पूजन विधि

औघड़ों द्वारा अनेक गोप्य पूजन किए जाते हैं । कुछ साधनाएँ तो ऐसी है जिनमें केवल साधक ही रहता है । ये साधनाएँ परम गोप्य साधनाओं की श्रेणी में हैं ।

चक्रपूजन मे आचार्य की स्वीकृति मिलने पर कुछ लोग सम्मिलित हो सकते हैं । इस साधना में केवल वीर भाव-वाले ही व्यक्ति सम्मिलित किए जाते हैं - अन्य नहीं ।

यह चक्र-पूजन कुछ निश्चित तिथियों पर ही किया जाता है जैसे कृष्णपक्ष की एकादशी आदि । *विधिः-*

१) एक बड़े कमरे में समस्त साधक आचार्य के साथ बैठते हैं, बीच में घट की स्थापना कर दीपक जला दिया जाता है। कुछ भोजन सामग्री साधकों के समक्ष रहती है।

२) प्रारम्भ में आचार्य द्वारा पूजन का कार्य सम्पन्न होता है।

३) माँ के आवाहन के बाद हाथ में त्रिकोण मुद्रा बनाकर सर्वप्रथम आचार्य औषधि पान करते हैं। और इसके बाद आचार्य उसी पात्र को अपने दाहिने ओर से साधको में चलाते हैं। प्रत्येक साधक औषधि पान कर अपने दाहिने ओर पात्र

को बढ़ाता जाता है और अन्त में इसी क्रम से वह पात्र पुनः चक्र की समाप्ति पर आचार्य तक पहुँच जाता है। आचार्य पुनः अवशिष्ट औषधि का पान करते हैं।

४) दूसरा पात्र बाएँ से प्रारम्भ होता है। हाथ में पुनः त्रिकोण मुद्रा बनाकर आचार्य औषधि पान कर अपने बायें वाले साधक को देते हैं और वह औषधि पानकर बाएँ वाले साधक को दे देता हैं इसी क्रम से पात्र पुनः चक्र पूर्ण होने पर आचार्य के हाथ में आ जाता है और आचार्य शेष औषधि का पान करते हैं।

५) औषधि पान के क्रम के बाद आत्माहुति

का क्रम चलता है । प्रत्येक साधक ३ या ५ आहुति देकर उसी हाथ से आचार्य के मुख में आहुति देता है । आहुति में खाद्य वस्तु का कोई परहेज नहीं है, उपस्थित सभी वस्तु ग्राह्य है ।

६) आहुति क्रम के बाद तृतीय पात्र पुनः दाहिने से उसी क्रम द्वारा चलाया जाता है ।

७) इसके बाद पूजन-क्रिया का विसर्जन होता है और आचार्य सहित समस्त साधक एक दूसरे से गले मिलते हैं ।

इस चक्र पूजन का रहस्य औषधि पान या कोई गोष्ठी नहीं-वरन् विश्व-बन्धुत्व

की भावना और प्राणिमात्र में समबुद्धि रखने का प्रयोगात्मक रूप है । केवल कहने मात्र से कल्याण नहीं हो सकता । विश्व-बन्धुत्व, विश्व-कल्याण नारों से ही नहीं वरन इसी प्रकार से हो सकता है ।

ॐ ह्रीं क्रीं स्वाहा

अघोर भैरवी चक्र-पूजा विधि

उत्तम साधक विशेष पूजा के समय भैरवी चक्रों या तत्वचक्रों का अनुष्ठान करते हैं । इस अनुष्ठान को चाहे जिस समय भी किया जा सकता है । इससे साधकों का मंगल होता है । भैरवी चक्र में आत्मिका शक्ति की आराधना करने से वे शीघ्रता से अभीष्ट को सिद्ध कराती है ।

भैरवी चक्र में जाति तथा जूठन का विचार नहीं हैं । चक्र में बैठे साधक गण शिव का रूप ही है ।

जहाँ पर भैरवी-चक्र का पूजन होता

है, वहाँ पर सर्व तीर्थ उपस्थित रहते हैं। देवताओं के साथ भृगु-वशिष्ट भी साधकों के रूप में उपस्थित होते हैं और उस प्रसाद को पाने के लिए देवता लोग लालायित रहते हैं।

भैरवी चक्र में देश-काल का विचार नहीं परन्तु पात्र का पूरा विचार है। कोई किसी का मित्र हो परन्तु उसमें पात्रता नहीं हो तो उसे नहीं लाना चाहिए नहीं तो बड़ा पाप लगता है। जो गुरु-निन्दक, चक्र-निन्दक और समूह-निन्दक हैं उन्हें चक्र में कभी न सम्मिलित करें-चाहे वे देश के राष्ट्रपति क्यों न हो। जो जाति का

अभिमान करता हो वह चक्र पूजन में निन्दित है उसे उस पूजा में कभी न बैठावें।

चक्र पूजन में झूठ न बोले, चपलता प्रकाश न करे, बहुत न बोलें, थूके नहीं, अधोबायु न त्याग करें ।

यह पूजन अपने गुरुदेव या किसी ब्रह्मनिष्ठ के सानिध्य में करें।

१) रमणीय स्थान में आसन बिछा (क्लिं फट) इस मंत्र से आसन को शुद्ध करके उस पर बैठे ।

२) ज्ञानवान साधक सिन्दूर, लाल-चन्दन या केवल जल से त्रिकोण और चौकोण

मण्डल को बनावें ।

३) फिर उस विचित्र घट की स्थापना करके उसमें दही और अक्षत दान करें और उस घड़े में सिन्दूर का तिलक लगाकर उसमें फल और पल्लव संयुक्त करें । फिर साधक इस घड़े को सुगंधित जल से परिपूर्ण करें ।

४) फिर प्रणव करके उसके इस त्रिकोण बना हुआ मण्डल पर उसकी स्थापना कर धूप, दीप दिखावें ।

५) गंध पुष्प से अर्चना करके उसमें इष्ट देवता का ध्यान करें और पूजा के संक्षिप्त विधानानुसार उसमें इष्ट देवता का पूजन

करें । इस पूजा में गुरुपात्र, नौ पात्रों का कोई प्रयोजन नहीं ।

६) साधक इस पूजा के समय अभिलाषानुसार तत्वों के सम्मुख स्थापना करके अपने इष्ट मंत्र के अन्त में फट् लगाकर पढ़े तथा सामग्री पर जल छींटे।

७) अन्दर की दृष्टि से देखे फिर पात्र में गन्धक पुष्प डालकर उसमें देवी अनन्तेश्वरी की और अनन्त भैरव का ध्यान करे जो सुन्दर तरुण, मनोहर कमलवदना भैरवी हैं तथा आनन्दकन्द सौभाग्य देने वाली भैरवी के ओठों से ओठों को लगाए हुए विचित्र मुद्रा में मुद्रितभैरव हैं उनका ध्यान करें ।

८) इस तरह का ध्यान करने वाला साधक चक्र पूजा में उपस्थित पुरापात्र में दोनो का सम्मिश्रण ध्यान-प्रणव फिर नाम जप तदुपरान्त नाम उच्चारण करके गन्ध-पुष्प द्वारा का शोधन करें।

९) *"ॐ ह्रीं, क्रीं स्वाहा"* इस मंत्र से माँस, मच्छ, मुद्रा, योनि को अभिमंत्रित करें ।

१०) भैरवी चक्र-पूजा के बीच में प्रणव का उच्चारण करना उचित है ।

भैरवी चक्र-पूजन से साधक गण आश्रम या साधना गृहों में बैठे-बैठे इस सृष्टि के प्रत्येक क्षेत्र के रहस्यों को जान लेता है और उद्घाटन करता है।

अघोर-बली-विधि

मृग, छाग, मेष, भैंसा, सूअर, कुक्कुट, गीध, कछुआ, गेंड़ा और कबूतर यह दस प्रकार पशु ही बलिदान के लिए श्रेष्ठ हैं। इनके शिवाय साधक के इच्छानुसार और भी पशुओं की बली दी जा सकती है ।

देवी या ईष्ट देवता का श्रृंगार पूजा करने के उपरान्त सावधान हो बलिदान करना चाहिए । साधक को नीचे बताए विधान से ही पशु आदि की बली करनी चाहिए ।

बली-विधि :-

१) रोग-रहित पशु को देवी के सम्मुख

स्थापना करके *"फट्"* मंत्र के द्वारा जल छिड़कें ।

२) वाग्य बीज मंत्र *"छाग पशुए नमः"* कर इष्ट मंत्र से गन्ध, सिन्दुर, पुष्प, नैवेद्य और जल के द्वारा पूजा करें ।

३) फिर पशु के दाहिने कान में पाशु-विमोचनी गायत्री *"पशु पाश्याय विग्रहे विश्वकर्मणे धिमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्"* का जप करें और पशु के कान में धीरे से कह दें ।

४) फिर खंड्ग लेकर *"ह्रीं"* मंत्र का उच्चारण करके खंड्ग के बीच के मूल वेश में बागेश्वरी सरस्वती, ब्रह्मा,

लक्ष्मी–नारायण, महेश्वरी की पूजा करें।

५) *'शिव-शक्ति यु क्राय खड्गाय नमः'* इस मंत्र से खंड्ग की पूजा करें ।

६.) इसके पश्चात् इष्ट मंत्र का जापकर इष्ट को समर्पण करें । फूल, अक्षत अर्पण करें ।

७) इष्ट का ध्यान करके तीक्ष्ण प्रहार से पशु का बध करें । शिष्य या अपने सदय प्रेमी से बध करावे । अपनी पूजा की हुई पशु का शत्रु से कदाचित वध न करावें ।

८) ब्रह्म राक्षस को भगाने के लिए पशु की आवाज किसी तरह भयंकर हो तो बड़ा अच्छा होता हैं । आवाज सुनकर ब्रह्म राक्षस भाग जाता है ।



अघोर दिनचर्या

१) प्रातः काल सूर्योदय से पहले उठकर–गुरु का ध्यान एवं इष्ट मंत्र का यथा सम्भव विधिवत जप करें ।

२) फिर पृथ्वी को अपने हाथ से स्पर्श करें - क्योंकि पृथ्वी माँ-स्वरूपा अगाध सहनशक्ति की प्रतीक है । इस क्रिया से तेज–कान्ति की आभा शरीर में प्रवेश होता है ।

३) उसके बाद पुरुषार्थ के प्रतीक अपने हाथों का दर्शन कर संकल्प लें कि आज मैं ज्यादा–से ज्यादा पुरुषार्थ करूँगा।

४) उसके बाद–समय काल के अनुरूप

अपने आश्रम योजना के अनुरूप नौकरी, पारिवारिक सामाजिक कार्य सफलतम अभिनेता की तरह दिन भर पुरुषार्थ करें । *"कर से कर्म करो विधि नाना, मन राखो जहाँ कृपा निधाना ।"*

५) उसके बाद अपने विकास एवम् मानव सेवा हेतु (आश्रम में) कुछ समय श्रम, एवम् अर्थ अवश्य दे ।

६) अन्त में रात्रि में, दैनिक कर्मों से निवृत्त हो विधिवत प्राणायाम, ध्यान-जाप कर ईश्वर (गुरु) को आज का जीवन सफल करने के लिए कृतज्ञता प्रकट करते हुए हाथ-पैर स्वच्छ कर मुख शुद्धि कर

मौतरूपी निद्रा को वरण कर लें ।

इस दिन-चर्या में सही आसन, सही चिंतन सही समय पर उचित कार्य एवम् व्यवहार भोजन-शुद्धि, (*"ॐ सच्चिदेकम् ब्रह्म"* मंत्र से जल छींटक कर) ईश्वर या गुरू को सदा अपने साथ जान कर प्राणायाम, जाप, मानव (मानव मात्र को भाई एवम् स्त्री मात्र को माँ) सही संकल्प, मानव कल्याण (समूह कल्याण) की भावना आदि का विशेष महत्व है ।

ॐ तत्सत्

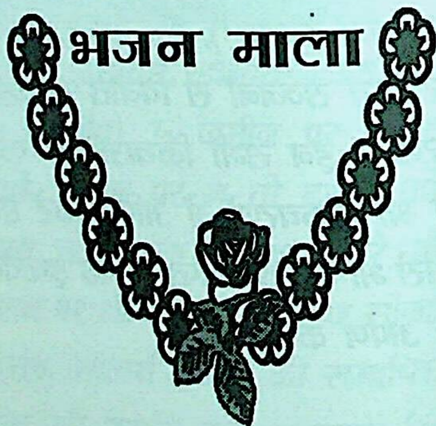
नवरात्र में पालनीय नियम

१- शील (ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय-निग्रह) २- मौन (संतोष) 3- जमीन पर सोना (अपने आसन पर न तो दूसरों को बैठाना न सुलाना । तथा दूसरे के आसन पर भी न बैठना और न सोना) ४- तप, तात्पर्य तामस की समाप्ति, शक्ति की उत्पत्ति तथा अल्पहार (२४ घण्टे में एक बार निमित्त रूप से) ५- जाप (इष्ट देव का) ६- पाठ, ७- ध्यान, ८- संकल्प और विकल्प रहित चित्त, ९- शरीर से किसी प्रकार का अपराध

न हो, 10- किसी भी दशा में इष्ट देव की अनुभूति कर प्राणिपात करें ('साष्टांग दंडवत'), 11- माता, पिता, गुरु एवं सज्जनों से विनीत व्यवहार करना। इन सभी क्रियाओं के फल को श्री गुरुचरणों में अर्पित करें एवं इससे भी जो फल प्राप्त हो वह इष्टदेव को अर्पण करें।

सर्वेश्वरी त्वं पाहिमाम् शरणागतम्




भजन माला



सर्वेश्वरी त्वम् पाहिमाम्

सर्वेश्वरी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
गुरुदेवजी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
अवधूतजी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
अघोरेश्वरी त्वम् पाहिमान् शरणागतम्
माँ कालीके त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
कापालिके त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
विंध्वासिनी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
माँ ताराजी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
माँ चण्डीके त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
भुवनेश्वरी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
वागेश्वरी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
राजेश्वरी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
महालक्ष्मी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
ललितेश्वरी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
ज्ञानेश्वरी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
सर्वेश्वरी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्
गुरुदेवजी त्वम् पाहिमाम् शरणागतम्

नमो शक्ति

नमो शक्ति... नमो शक्ति...
नमो शक्ति... नमो शक्ति ।
नमो गुरुवे... नमो गुरुवे...
नमो गुरुवे... नमो गुरुवे ।
नमो तारा... नमो तारा...
नमो तारा... नमो तारा ।
नमो चण्डी... नमो चण्डी...
नमो चण्डी... नमो चण्डी ।
नमो काली... नमो काली...
नमो काली... नमो काली ।
नमो दुर्गे... नमो दुर्गे...
नमो दुर्गे... नमो दुर्गे ।
नमो शक्ति... नमो शक्ति...
नमो शक्ति... नमो शक्ति ।

लहर-लहर लहराई हो . . .

लहर - लहर लहराई हो ... सर्वेश्वरी का झण्डा ।
लहर - लहर लहराई हो ... सर्वेश्वरी का झण्डा ।।
ई झण्डा में गुरुदेव विराजे, गुरुदेव विराजे
अघोरेश्वर विराजे ।
ज्ञान की ज्योति जलाइ हो सर्वेश्वरी का झण्डा ।।
ई झण्डा में दुर्गा काली, दुर्गा काली माँ खप्पर वाली
भक्तों का दर्द मिटाय हों सर्वेश्वरी का झण्डा ।।
ई झण्डा में भोलेनाथ विराजे, नाथ विराजे
भोलेनाथ विराजे ।
हर-हर-वम-वम कहाइ हो सर्वेश्वरी का झण्डा ।।
ई झण्डा में साधु संत विराजे, संत विराजे
महंत विराजे ।
घर-घर में अलख जगाइ हो सर्वेश्वरी का झण्डा ।।
इ-झण्डा में मानवता विराजे, मानवता विराजे
सद्भावना विराजे ।
जन-जन में ज्योति जलाइ हो, सर्वेश्वरी का झण्डा ।।
लहर-लहर लहराई हों सर्वेश्वंरी का झण्डा ।
लहर-लहर लहराई हों सर्वेश्वरी का झण्डा ।।

स्वात्माराम

स्वात्माराम...आत्माराम...आत्माराम आत्माराम!
स्वात्माराम...आत्माराम...आत्माराम आत्माराम!
स्वात्माराम...आत्माराम...आत्माराम आत्माराम!
स्वात्माराम...आत्माराम...आत्माराम आत्माराम!
स्वात्माराम...आत्माराम...आत्माराम आत्माराम!

हर हर - बम बम

ॐ हर-हर-हर-हर ... बम-बम-बम
ॐ हर-हर-हर-हर ... बम-बम-बम
ॐ हर-हर-हर-हर ... बम-बम-बम
ॐ हर-हर-हर-हर ... बम-बम-बम
ॐ हर-हर-हर-हर ... बम-बम-बम

जागो फिर एक बार

जागो फिर एक बार
जागो फिर एक बार
लुट रही, स्वतंत्र देश की स्वतंत्र सभ्यता
लुट रही, समाज के चरित्र की पवित्रता ।
भ्रष्ट धर्म में फँसी सिसक रही मनुष्यता
भ्रष्ट राजनीति विश्व पर उगल रहा अंगार।।
जागो फिर एक बार
जागो फिर एक बार
जागो . . . भोले . . . जागो . . .
जागो . . . बाबा . . . जागो . . .
जागो . . . बंधु . . . जागो . . .
जागो . . . बच्चों . . . जागो . . .
जागो . . . माता . . . जागो . . .
जागो फिर एक बार
जागो फिर एक बार

बम लहरी

बम-लहरी-बम-बम लहरी बम लहरी-बम बम लहरी
बम-लहरी-बम-बम लहरी बम लहरी-बम बम लहरी
कभी नहीं ठहरी-ठहरी, हर दम लहरी-हर पल
लहरी पल-पल लहरी, क्षण क्षण लहरी, बम लहरी
बम बम लहरी, बम लहरी, बम बम लहरी ।।



प्रातः स्मरणीय परमपूज्य अघोरेश्वर
महाप्रभु भगवान रामजी



ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः
सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्र रुपेभ्यः
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।